Two days Workshop

on

Design & Development of self learning material (**SLM**)

08^{Th} and 09^{Th} April 2017

//प्रतिवेदन//

पण्डित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़, बिलासपुर मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पर आधारित एक उच्च शिक्षण संस्थान है। संस्थान के द्वारा स्वअध्ययन सामग्री का निर्माण कार्य किया जाता है। मुक्त शिक्षा में संस्थान द्वारा मुद्रित स्व अध्ययन सामग्री शिक्षार्थियों के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है। इसके निर्माण में इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक एवं अन्य साधनों का भी उपयोग किया जाता है। स्वअध्ययन सामग्री का निर्माण शिक्षार्थियों में शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ाने वाला हो, सुगम हो, अधिगम के वास्तविक उद्देश्यों को पूर्ण करने वाला हो तथा उत्कृष्टता पूर्ण हो इस ध्येय के साथ Design & Development of self learning material (SLM) विषय पर विश्वविद्यालय के द्वारा दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

विश्वविद्यालय के मुख्य सभागार में दिनांक 08 एवं 09 अप्रैल, 2017 को दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम माननीय कुलपति प्रो. बंशगोपाल सिंह के मुख्य आतिथ्य, कुलसचिव डॉ. राजकुमार सचदेव की अध्यक्षता, डॉ. देबाल सिंहराय (प्राध्यापक इग्नू) डॉ. के. एस. तिवारी (क्षेत्रीय निदेशक इग्नू, भोपाल) के विशिष्ट आतिथ्य तथा विशेष आमंत्रित अतिथि डॉ. जी. डी. शर्मा (मान. कुलपति, बिलासपुर विश्वविद्यालय) की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। कार्यशाला में उपरोक्त सम्मानीय महानुभावों के अतिरिक्त अन्य महाविद्यालयों के प्राचार्य, शिक्षकगण तथा विश्वविद्यालय में कार्यरत अधिकारियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने अपनी सहभागिता दी।

कार्यशाला का शुभारंभ 08 अप्रेल, 2017 को प्रातः 10.00 बजे हुआ। उद्घाटन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि प्रो. बंशगोपाल सिंह जी ने कहा –''हमारे संस्थान में तैयार पाठ्य सामग्री प्रतियोगी छात्रों के बीच काफी लोकप्रिय है। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले कई छात्र मुक्त विश्वविद्यालय की पाठ्य सामग्री से सतत् ज्ञार्नाजन कर रहे है। उन्होने उल्लेखित किया कि पाठ्य सामग्री ऐसी लिखी जाए कि जिससे अध्ययन करने वाले शिक्षार्थियों की सभी जिज्ञासाओं का समाधान हो सके।''

कार्यशाला में प्रथम दिवस में पांच सत्रों का आयोजन किया गया। इन सत्रो में भिन्न–भिन्न विषयों पर विषय–विशेषज्ञों द्वारा अपने विचारों का प्रतिपादन किया गया जिसकी सत्रवार जानकारी निम्नानुसार है–

VERIFIED

REGISTRAR
Pt. Sunderlal Sharma (Open)
University Chhattisgarh
BILASPUR (C.G.)

Dr. S. Rupendra Rao
Incharge NAAC Criteria-III
PSSOU, CG Bilaspur

प्रथम दिवस 08 अप्रैल, 2017 –

प्रथम सत्र – इस सत्र के विषय–विशेषज्ञ डॉ. देबाल सिंहरॉय जी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा सेवारत कार्मिकों की क्षमता बढ़ाने तथा शैक्षिक रूप से वंचित क्षेत्रों में रहने वाले शिक्षार्थियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण शिक्षा प्रणाली है। इसके समयानुकूल विकास में तकनीकी माध्यमों को बराबर महत्व दिया जाना चाहिए।

द्वितीय सत्र – इस सत्र को संबोधित करते हुए विषय–विशेषज्ञ डॉ. के. एस. तिवारी जी ने कहा कि स्व अध्ययन सामग्री में विषय–वस्तु तथा उसका प्रस्तुतीकरण भाषा की दृष्टि से किसी भी अस्पष्टता से मुक्त होना चाहिए। उन्होंने इसके आगे कहा कि स्व–अधिगम सामग्री में विद्यार्थियों के भीतर रूचि और अभिप्रेरणा उत्पन्न करने की क्षमता होनी चाहिए। अंत में उन्होंने इस बात पर अधिक जोर दिया कि SLM के विकास के लिए विशिष्ट ज्ञान, कौशलों एवं सक्षमताओं वाले शिक्षकों को ही सम्मिलित किया जाना चाहिए।

तृतीय सत्र – विषय–विशेषज्ञ डॉ. देबालसिंहरॉय ने सभा के समक्ष परामर्श दिया कि विषयों में कॉन्सेप्ट को सरल व सुगम बनाने के लिए डायग्राम का प्रयोग किया जाना चाहिए। डायग्राम के प्रयोग से शिक्षार्थी को चैप्टर के टॉपिक्स, सबटॉपिक्स और उनके बीच के संबंधों की अच्छी समझ विकसित होती है। इसके माध्यम से पढ़ी गई जानकारी लंबे समय तक विद्यार्थी की स्मृति में स्थाई रूप से बनी रहती है।

चतुर्थ सत्र – विषय–विशेषज्ञ डॉ. के. एस. तिवारी जी ने सभा में अपने संक्षिप्त विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि पाठ्यचर्या के तीन बुनियादी प्रकार हैं– 01. विषय केन्द्रित, 02. शिक्षार्थी केन्द्रित तथा 03. समस्या केन्द्रित। एक संपूर्ण पाठ्यचर्या में इन तीनों बिन्दुओं का उपयुक्त समावेश होना आवश्यक है। किसी भी एक बिन्दु की उपेक्षा से पाठ्यचर्या के डिजाईन में अनेक खामियाँ आ जाती हैं। बदलते परिवेश एवं आवश्यकता के अनुरूप इस कार्य में सतत विकास होते रहना चाहिए।

पंचम सत्र – इस सत्र में विषय–विशेषज्ञ डॉ. देबालसिंहरॉय ने अपने विचारों का प्रतिपादन किया और कहा कि स्व–अध्ययन सामग्री के निर्माण में अधिगम के उद्देश्यों का प्रस्तुतिकरण करते हुए सही रूप में इसकी व्याख्या करने का प्रयास करना चाहिए। पाठ्य सामग्री प्रस्तुतीकरण में वार्तालाप शैली का पुट शामिल करना चाहिए। उन्होंने इसके आगे यह भी सुझाव दिया कि अधिगम सामग्री में तुम या आप संबोधन के द्वारा अध्येता को संबोधित किया जाना चाहिए। इससे अध्येता लेखक से जुड़ाव का अनुभव करता है तथा इससे वह अपना महत्व भी समझता है, विषय–विशेषज्ञ द्वारा सामग्री निर्माण में लगातार शोध निष्कर्षों का सहारा लिये जाने का स्पष्ट संकेत किया गया । अपने उद्बोधन के अंत में उन्होंने कहा कि इसमें राष्ट्रीय एवं सामाजिक लक्ष्यों को भी समाहित करना चाहिए। इस सत्र के पश्चात् प्रथम दिवस की कार्यशाला का समापन किया गया।

अंतिम दिवस 09 अप्रैल, 2017 – कार्यशाला के अंतिम दिवस में भी प्रथम दिवस तरह पांच सत्रों का आयोजन किया गया। इस दिन विशेषज्ञों द्वारा प्रदत्त विषयों पर गूढ़ विवेचना की गई। विवेचनान्तर्गत विशेषज्ञों ने अपने अनुभवों को भी उपस्थित जनों के बीच साझा किया। अंतिम दिवस की विभिन्न गतिविधियों की जानकारी सत्रवार निम्नानुसार है –

षष्ठम् सत्र – इस सत्र के विषय–विशेषज्ञ डॉ. देबालसिंहरॉय ने कहा कि पाठ्यक्रम लेखक को पाठ्य विवरण का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। पाठ्यक्रम लेखक को सबसे पहले अधिगम अनुभव/कार्यो की दृष्टि से पाठ्य विवरण का पूरी तरह विश्लेषण करना चाहिए। पाठ्यक्रम विशेष में विद्यार्थियों के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता देने की दृष्टि से लेखक को उसकी विषय–वस्तु की व्याप्ति का ज्ञान भी होना चाहिए। इस सत्र को संबोधित करते हुए उन्होंने इसके आगे इकाई शीर्षक निर्माण के विभिन्न पक्षों का विस्तृत वर्णन किया इसके अतिरिक्त उन्होंने पाठ्यक्रम में विषय–वस्तु को प्रभावी बनाने के उपायों पर भी चर्चा की।

सप्तम् सत्र – इस सत्र के विषय विशेषज्ञ डॉ. दिवाकर सिंह राजपूत जी (प्राध्यापक केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर म.प्र.) रहें। उन्होंने विषय की विवेचना करते हुए कहा की स्व अधिगम सामग्री को शिक्षार्थी की मनोवैज्ञानिक आवश्यकता के अनुसार होना चाहिए संबंधित विषय सामग्री को इसमें सभी तथ्यों को व्यवस्थित करके संपूर्ण विषय–वस्तु को सरलतम् तरीके से रखा जाना चाहिए। विषय सामग्री को सरल से कठिन की ओर तथा प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर प्रस्तुत किया जाना चाहिए। इस सत्र में विशेषज्ञ महोदय ने इस बात पर भी बल दिया की विषय–वस्तु को अध्येता के लिए अधिक ग्राह्य बनाने हेतु इसमें गतिविधि परक क्रियाओं को भी शामिल किया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम में सरल प्रश्न उत्तर, सारिणी, मानचित्र एवं सारांश जैसे आवश्यक तत्वों को भी शामिल करना चाहिए। इसके साथ में संदर्भ ग्रन्थों की सूची भी अध्ययन सामग्री में शामिल करनी चाहिए।

अष्टम् सत्र – इस सत्र में विषय–विशेषज्ञ डॉ. के. एस. तिवारी जी ने ''पाठ्य सामग्री का प्रस्तुतीकरण'' विषय पर अपने विचार रखें तथा उन्होंने कहा कि अधिगम सामग्री सरल भाषा में प्रस्तुत की जानी चाहिये। अध्यायओं में छोटे एवं सरल वाक्यों के साथ यथा सम्भव मनोरंजनात्मक प्रसंगों का भी प्रयोग किया जाना चाहिये। अधिगम सामग्री का बाह्य स्वरूप अर्थात कागज, छपाई, चित्र, रंग, आकार आदि के साथ ही इसका आन्तरिक स्वरूप भी गुणवत्ता युक्त होना चाहिये क्योंकि यहीं शिक्षार्थी को आकर्षित और अभिप्रेरित करते हैं। इसके आगे उन्होंने कहा विषय–वस्तु अभ्यास कार्य एवं गृह कार्य की दृष्टि को ध्यान रखकर निर्माण किया जाना चाहिये, अध्ययन सामग्री निर्माण में समय–समय पर इसके विस्तार एवं सुधार भी होते रहना चाहिए विद्यार्थी में धारणा शक्ति में वृद्धि करने संबंधी निर्देश देते हुए डॉ. तिवारी ने अपने उद्बोधन को विराम दिया।

VERIFIED

REGISTRAR
Pt. Sunderlal Sharma (Open)
University Chhattisgarh
BILASPUR (C.G.)

Dr. S. Rupendra Rao
Incharge NAAC Criteria-III
PSSOU, CG Bilaspur

नवम् सत्र – नवम सत्र के विशेषज्ञ डॉ. दिवाकर सिंह राजपूत थे। उन्होंने ''स्व–अध्ययन सामग्री निर्माण एवं विकास'' विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि विषय वस्तुओं को बोध गम्य बनाने हेतु दृष्टांतों एवं उदाहरणों का प्रयोग करना चाहिए। उदाहरण से तुलनात्मक शैली का अधिक विकास होता है। अंत में उन्होंने कहा कि संबंधित विषयों में सामग्री विद्यार्थियों के अभ्यास गतिविधि को बढ़ाने वाला हो जिससे उनमें क्रियात्मकता एवं अधिगम के प्रति अभिरूचि का विकास हो सके।

दशम सत्र – दसवा सत्र गतिविधियो से सबंधित था जिसमें विशेषज्ञ डॉ. के. एस. तिवारी जी द्वारा सभी प्रतिभागियों को SLM निर्माण विषय से संबंधित SLM के प्रारूप, इकाई निर्माण आदि से संबंधित गतिविधियाँ कराई। इसके साथ ही उन्होंने शिक्षकों को उनके संबंधित विषय में ध्यान रखने वाली कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं की भी चर्चा की ताकि विषयवस्तु अधिक उपयोगी, ग्राह्य और रूचिकर बन सके।

उक्त दोनो ही दिवसों में विशेषज्ञ एवं सहभागियों के मध्य अच्छा सामंजस्य रहा जिससे कार्यशाला के उद्देश्यों की पूर्ति हुई ऐसा कहा जा सकता है आगामी भविष्य में भी विश्वविद्यालय द्वारा इस प्रकार के कार्यशाला एवं प्रशिक्षण कार्यो का आयोजन किया जाता रहेगा जिससे शिक्षक स्वयं में समयानुकूल प्रभावी एवं कौशल युक्त अभिक्षमता का विकास कर सके।

------0------

संयोजक

विभाग प्रमुख
पुस्तक एवं उत्तर पुस्तिका निर्माण
पं. सुंदरलाल शर्मा (मुक्त) वि.वि
बिलासपुर (छ.ग.)

VERIFIED

REGISTRAR
Pt. Sunderlal Sharma (Open)
University Chhattisgarh
BILASPUR (C.G.)

Dr. S. Rupendra Rao
Incharge NAAC Criteria-III
PSSOU, CG Bilaspur